वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A perfect blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 8	Year 1	Volume 8	April. 2013 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription cost Annual - **Rs. 75**-see page 5

Contact: Bhartendu Sood, Publisher, Editor & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tele. 0172-2662870 (M.) 9217970381 E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

विचार

ईशवर के दर्शन कौन पाता है

जिस के अस्तित्व को हम मानते हैं, जिसे सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वशक्तिमान, सर्वाधार, सर्वेश्वर, मानते हैं। जिसे ही उपासना के योग्य मानते हैं और जिसकी उपासना और अराधना करते है उससे मिलने कर चाह स्वभाविक है। यही नही हम उसके अधिक से अधिक नजदीक रहना चाहते हैं। अब प्रश्न उठता है, कौन उसके दर्शन पा सकता है? इसके उत्तर में कहा गया है जिसकी वृतियां संसारिक विष्यों में लिप्त हैं,ऐसा मनुष्य भगवान को तो क्या अपने आप को भी नहीं देख पाता। ऐसा इस लिये है, क्योंकि चित की वृतियां उसे भटकाती फिरती हैं, कभी एक वस्तु में तो कभी दूसरी वस्तु में ले जाती हैं। मन की तेज रफतार, आत्मा को परमात्मा से नहीं मिलने दे रही। जब आत्मा, परमात्मा से दूर है ऐसे में भगवान के दर्शन नहीं हो सकते।

अत ऐव भगवान के दर्शन वही कर सकता है जिस ने चित की वृतियों को और मन को अभ्यास व वैराग्य द्वारा वश में किया हुआ है

कठोपनिषद में कहा है———जो ज्ञानवान नहीं है, जिसका मन व इन्द्रियां वश में नहीं हैं वह भगवान के दर्शन नहीं कर सकता अपितु जन्म मरण के चक्र में ही रहेगा।

संसार में अधिक संख्या उन लोगों की है जो आत्म बल से वंचित है व प्रमाद और आलस्य में फंसे हुये हैं वे इस शरीर को ही सब कुछ समझते हैं और इस की पूजा में लगे रहते हैं, जिन्होने यह निश्चय कर रखा है जैसे भी हो धन कमाओ और खाते कमाते ही मर जाओ, जिनको इतना भी ज्ञान नहीं है कि जो चीज़ बनी है वह समाप्त भी होगी, ऐसे लोग न तो आत्म दर्शन कर सकते है और न ही भगवान के दर्शन।

जिसका व्यवहार दूसरों के प्रति कूरता, दम्भ और छल कपट का है, जिनकी वाणी वश में नहीं है, जो

ईष्या द्वेष की आग में जल रहें हैं, ऐसे लोग भी भगवान को नहीं पा सकते।

प्रभु दर्शन वही कर सकते हैं जो आत्मबल बढ़ाने के लिये ब्रहमचर्य का पालन करते हैं। जो अहिंसा व सत्य के मार्ग पर चलते हैं। जो संसार के पदार्थो को अपने जीवन की यात्रा का एक साधन मानते हैं। वासना की आग को वैराग्य की राख से दबा कर रखते हैं। जिनका मन शान्त है व अंहकार जिन से कोसों दूर है। जो शरीर से स्वस्थ है। कठोपनिषद में लिखा है–––यह संसार वासनारूपी जल से भरा हुआ है परन्तु हे मनुष्य तू ज्ञानरूपी नौका में सवार होकर पार जा सकता हैं ऐसा ज्ञान जो तुझे चित की वृतियां और प्रमाद व आलस्य से बचाय रखे।

यह भी सत्य है न तो कोई दुनिया को छोड़ सकता है न दुनिया किसी को छोड़ती है। प्रयत्न यह होना चाहिये कि दुनिया के सारे व्यवहार करते हुये अपनी वृति को इसके जाल में फंसने न दिया जाये। तुलसी ने इस बात को बहुत सुन्दर कहा है,

तुलसी जग में यों रहो,
त्यों रसना मुख माहि।
खाती है घी तेल नित,
फिर भी चिकनी नाहीं

इस विषयों से भरे संसार में वैसे ही रहें जैसे मुंह के अन्दर जिव्हा है। वह तेल घी सब खाती है, फिर भी उस पर चिकनाहट नहीं आती।

भगवान कृष्ण अर्जुन से कहतें हैं जो चित योगाभ्याास से युक्त है वह वृतियां और प्रमाद व आलस्य पर विजय पाता हुआ परम दिव्य पुरूष को प्राप्त होता हैं।

*****

मां

तू है तो अन्धेरे पथ में हमें सूरज की ज़रूरत क्या होगी
ऐ मां तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी

हमारे शास्त्रों का मानना है कि माता की समानता इस संसार में कोई भी नहीं कर सकता।

शास्त्र कहते हैं मां के समान कोई तीर्थ नहीं। जिसकी मां जीवित है उसे किसी तीर्थ पर जाने की ज़रूरत नहीं। उसका तीर्थ घर में विद्यमान है। मां की सेवा से बड़ा कोई तीर्थ नहीं। मां के समान गति नहीं मां के समान कोई रक्षक नहीं। माता की पूजा के समान कोई पुण्य नहीं। इसी लिये माता को देवता कहा है क्योंकि वह सन्तान को सदैव देती ही है बदले में कुछ नहीं लेती।

आर्य समाज के सत्संग में एक पण्डित जी द्वारा बताई एक सच्ची घटना सदैव याद रहती है। पलवल, हरियाणा में एक माँ अपने दो छोटे बेटों के साथ जा रही थी अचानक जोर के ओले पड़ने शुरु हुये। कहीं छुपने का स्थान न था माँ ने अपने लालो को अपने नीचे छुपा लिया और वहीं लेट गई। जब ओले पड़ने बन्द हुए तो लोग एंकत्रित हुये, क्या देखते हैं, माँ बड़े–बड़े ओलें के प्रभाव से प्राण दे चुकी थी हाँ उसके लालों को कुछ न हुआ था। यह हैं माँ व बाप का प्यार।

वही परिवार सुखी रहता है उन्ही को प्रसन्नता मिलती है जो माता–पिता व बड़ों को सुखी रखते हैं। वेद में जिन पांच यज्ञों का मनुष्य को दैनिक जीवन में पालन करने के लिये कहा गया है उन में पितृ यज्ञ एक है जिस का अर्थ है –घर मे माता पिता, दादा दादी, नाना नानी व दूसरे बर्जुगो की सेवा करना।

सच कहा हैं,

पहली नमस्ते उस ईश्वर को जिसने जगत बनाया है

दूसरी नमस्ते उन माता–पिता को जिन्होने गोद खिलाया हैं तीसरी नमस्ते गुरु जनों को जिनसे शिक्षा पाई है

*****

RELIGION IN A NEW ROLE

Editorial

Nothing in this world is static. Everything is changing. Even the law irrespective of its origin is not static. Its interpretation changes with time. It holds good for religion too. Only that religion is a religion in its true sense which connects itself to the society, its ethos and mores and responds to its needs. But, it is possible when religion rises above rituals and religiosities.

At present, our society is passing through a highly turbulent period. Crimes against women have stirred the conscience of every right-minded citizen. Punishment for such heinous crimes is one aspect which can't be compromised and has to be deterrent but to find the root cause of the abnormal increase in such crimes is another such aspect which merits a serious thought. When we go in depth, we find that demography of our habitats is under going fast change. Every big city has 40% migrants who generally live away from their families. There can't be two opinions that institution of family acts as a big support to every body. These 40% migrants, when away from their families, feel the absence of family support system and it is here that the need of some other support system arises and this void can be filled by a system called social support system.

They need social support which
our religious institutions can provide

Sometimes back when I was in Colombo, I was very happy to see that Monasteries over there served as the counseling centers for the citizens. People would come to the monks and discuss their family issues and other problems. Monks with their wisdom imbued in spirituality gave solutions which very often would make them less stressful, if not completely satisfied. Many a time, monks would take the issues to the local government of their Taluka. In a way, monasteries are doing a great job of acting as the social support system in Sri Lanka. Likewise, many ISKCON centers and Gurudwaras in other countries are also acting as a support system to the Indians who land there.

The best thing is that we don't need any investment to create this social support system. Our religious institutions are already equipped to provide it. It doesn't call for money or manpower investment. We have religious institutions in all the big cities and also have a large pool of plus 60 aged persons who have rich wealth of worldly experience. Best thing is that majority of them want to use this period of life to help the less fortunate. What is required that Social support system cells are opened in all temples. These can be manned by retired persons of that organization itself. Each person can devote one day in a month. The function of these cells will be to provide counseling to the migrants and help in solving their problems. Most of our migrants are still not literate and need help to understand the infrastructure available in new place or busy in their work they do not come to know. Many a times, away from their families they have anxieties, which soon convert in to stress and this stress takes them to various evils. Recently, I had engaged a painter in my house, everyday he'd come during lunch hours and ask for hundred bucks. One day when I asked him what he does with this money, his reply was that he went to a doctor in near by colony to take medicine. Soon I could know that he was going to some quack who'd take hundred rupees for some intoxicant. He discussed his family problems with me and fortunately he could eventually come out of this habit. He brought his family and now his two children are getting good education in govt. schools which was not available in his village.

I sincerely feel that we need to create such social support cells in religious institutions. I am sure once we implement it, the crimes, especially rapes will come down. After all man is a social animal and life is life only with others and religion is religion only when it reforms the society and makes the man a better human being.

Bhartendu Sood

ढ़ाई अक्षर प्रेम का

श्रीमति सुखदा सरना

सब गुण एक तरफ और प्रेम का गुण एक तरफ। यदि हम यह गुण अपना लें , तो इस हृदय में आत्मा के साथ परमात्मा का स्वरूप साफ दिखाई देगा। जब प्रेम की दृष्टि बढ़ेगी तो घृणा नफरत स्वयं खत्म हो जायेगी।

गुण अवगुण तो हर मानव में मिलजुल कर बसते है। यदि अपनत्व पैदा करना है तो दूसरों के अवगुणों को नज़र अन्दाज़ करके, उसके गुणों की प्रशंसा करनी होगी, तभी प्रेम को स्थान मिलेगा। जैसे गाय अपने बछड़े की तरफ बड़ती है वैसे ही आप अगर अपने आस पास के लोगों की तरफ बड़े तो सभी द्वेष दूर हो सकते हैं और आपस में प्रेम पैदा होता है। प्रेम बिल्कुल निष्कपट, निःस्वार्थ भाव से पूर्ण समर्पण के साथ करना चाहिए । प्रेम में कभी कहीं कोई स्वार्थ की भावना, शर्त वा पूर्वाग्रह नहीं हो सकता क्योंकि प्रेम कोई व्यापार या विनिमय की वस्तु नहीं है । प्रेम करने के लिए 'मैं' और 'मेरे'की भावना समाप्त करके 'हम' और 'हमारे' की भावना उत्पन्न करें । प्रेम लौकिक और पारलौकिक सफलता प्राप्ति का उत्तम साधन है ।

किसी शायर ने बहुत सुंदर कहा है

सदियों के फासले लम्हों में मिट सकते हैं
हाथ मिलाने वाले अगर दिलों को मिलां लें

प्रभु सवयं प्रेम का केन्द्र है परमात्मा प्रेमस्वरूप है। प्रेमस्वरूप परमात्मा से व उसके बनाये प्राणियों से जब हम प्रेम करते हुए जुड़ जाते हैं तो प्रेमस्वरूप हो जाते हैं और प्रेम में परम संतुष्टि मिलती है। इस संसार में हम आयें हैं तो इस संसार को अपना बनाना होगा। न तो हम प्रभु को भूलें और न ही इस जगत को भूलें।

एक कथा कहानी याद आ रही हैं एक भटके मनुष्य ने प्रभु से शांति मांगी, तो प्रभु ने जवाब दिया यह मैं नहीं कर सकता। हे मनुष्य यह तेरे अन्दर ही मजूद है, उसकी खोज कर और उत्पन्न कर। उस मनुष्य ने जब सुख मांगा तो प्रभु ने जवाब दिया–– हे मेरे प्यारे, वह भी शान्ति के अन्दर ही है। जब शान्ति पा जायेगा जो सुख ही सुख अनुभव करेगा।

प्रेम की प्यास, प्रेम पाने की तड़प, परमात्मा के अतिरिक्त और कहीं भी नहीं मिट सकती। परमात्मा प्रेमस्वरूप है। प्रेमस्वरूप परमात्मा से जब हम प्रेम करते हुए जुड़ जाते हैं तो प्रेमस्वरूप हो जाते हैं। प्रेम में परम संतुष्टि मिलती है। मेरे स्वामी, मेरे सर्वस्व, मेरे प्रेमाचार मेरी अनदेखी कभी नहीं करेंगे। वे हमें नहीं ठुकराएंगे। वे हम लोगों से बस प्रेम चाहते हैं और बदले में अनंत प्रेम को उड़ेल देते हैं।

संत कबीर ने भी बड़े सुंदर शब्दों में कहा

जा घट प्रेम न संचरै , सो घट जान मसान ।
जैसे खाल लुहार की , सांस लेत बिन प्राण ।।

अर्थात जिसके मन में प्रेम की हिलोरे नहीं उठती वह मृतक के समान है । परमात्मा भी आपका प्रेम ही चाहते हैं उनको आपका चढ़ावा नहीं चाहिए। उनके यहां क्या लड्डुओं और चाढ़ावों की कमी है ? वे ही तो आपको लड्डू देते हैं। उन्होंने ही तो संसार बनाया है। आप संसार बनाने वाले को क्या चढ़ाओगे ? उन्हीं की चीज उन्हीं के चरणो मे

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Amit Arts 36 MW Industrial Area, Ph-I, Chandigarh 9216504644
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

समर्पित करते हो। उन्हें यह सब नहीं चाहिए। परमात्मा के प्रति हर स्थिति में सर्मपण, ईश्वर के गुणों को अपने में धारण करने का संकल्प व परमात्मा के प्राणीयों से प्यार व हमदर्दी, उस अनंत प्रभु से हृदय में दया व उदारता की प्रार्थना ही प्रभु से प्रेम व भक्ति है।

'ऋग्वेद में कहा है

सं गच्छध्वं सं वदध्व्र संवो मनांसि जानतामं।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाम उपासते

ऐ ऐश्वर्य के अभिलाषी मनुष्यो ! तुम आपस में मिलकर चलो, मिलकर रहो, प्रेम से बातचीत करो, तुम एक दूसरे से मन मिलाकर ज्ञान प्राप्त करो। जिस प्रकार हमारे पूर्वज विद्वान एक दूसरे से अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हुए ऐंश्वर्य और उन्नति प्राप्त करते थे, वैसे ही तुम भी करो।

85 वर्षिय श्रीमति सुखदा सरना बहुत समर्पित आर्य समाजी हैं। उन्होने कई पुस्तकें लिखी है। उनका कहना है सालों साल आर्य समाजों में जाने के बाद, हमारा कर्तव्य है कि जो हमने इतने साल सुना है वह दूसरों तक पहुंचायें न की केवल एक श्रोता बन कर ही रहें। मैं अपनी पुस्तको को अपने रिश्तेदारो व मित्रों तक पहुंचाती रहती हूं। यह कार्य मुझे शक्ति व जीने का मकसद देता है।

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 75 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। शुल्क आप मिलनें पर दे सकते है।
2. आप चैक या Cash निम्न अकाउंट में जमा करवा सकते है।
   Vedic Thoughts - Central Bank of India A/C No. 3112975979 Bhartendu Sood
   IDBI Bank - 0272104000055550 Bhartendu Sood , ICICI Bank 659201411714
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

****

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है

कृप्या निम्न address पर सर्म्पक करें

भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-A, चण्डीगढ़.160047

0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

जब हमें हर चीज से शिकायत है

नीला सूद

हां, यह सत्य है, हम में बहुत से ऐसे हैं जिन्हे हर चीज से शिकायत होती है। यह उनके जीवन की शैली बन गई होती है।

चण्डीगड़ के पोश सैक्टर में मैं किसी काम से गई थी थी तो किसी ने मुझे पुकारा, मुड़ कर देखा तो एक महिला जो किसी समय हमारी मकान मालकिन रही थी मुझे बुला रही थी। मुझे अपने पास आता देख अपनी मर्सडीज (Mercedes) गाड़ी से उतरी। मैने हाल पूछा तो वही पुराना रोना शुरू कर दिया–––'' तू देख नहीं रही मैं कितनी कमज़ोर हो गई हूं। गोडों में दर्द रहता है और पीठ में भी। अच्छी काम वाली मिलती नहीं, अपने से काम होता नहीं बस किसी तरह काट रहें हैं। तुम्हारे जाने के बाद हमने कोई किरायेदार भी नहीं रखा, अच्छा किरायेदार मिलता ही कहां है। बाहर निकलो तो traffic इतना है कि आदमी सोचता है अन्दर ही अच्छे हैं''

भगवान की सब दया है फिर भी शिकायते ही शिकायते है।

इसके विपरीत हमं एक बार उतराखण्ड में पैदल ही जा रहे थे तो एक बुढ़िया को देखा

जो की लकड़ी का बोझा पीठ पर लादे जा रही थी। चेहरे पर संतोष व मुस्कराहट झलक रही थी। हमें देखा तो मुस्करा दी। हमने कहा––मां जी राम राम, क्या हाल है आपका। जवाब मिला,–– भगवान की बड़ी कृपा है। गंगा मां की बहुत कृपा है।

अन्तर देखने वाला है। पहली मंहगी कार में जा रही है, बहुत आलीशान घर है, सब भौतिक सुख हैं पर फिर भी हर किसी से शिकायत है। दूसरी को पता नहीं शाम का भोजन नसीब भी होगा या नहीं पर फिर भी चेहरे पर संतोष व मुस्कराहट झलक रही थी। पहली को मिलने पर सोच रही थी, जल्दी पिछा छूटे, दूसरे को मिलने पर दिल कर रहा था और कुछ भी जानू इस के बारे में।

यह सत्य है हम खुद ही अपना संसार बनाते हैं। अगर हम चाहते हैं कि लोग हमें मिलने में सुख अनुभव करें तों सब से पहले हमें दुखड़े रोने की आदत बदलनी होगी

जब हम शिकायत या आलोचना करतें हैं तो जो एक बड़ा नुकसान हम खुद का करते हैं वह है कि हमारी अपनी सोच नकारात्मक हो जाती है। इसके विपरीत जब हमारी संतोष व धन्यवाद की प्रतिक्रिया होती है तो हमारी सोच सकारात्मक हो जाती है।

सेहत के लिहाज से भी यह कहा जाता है कि क्रोध, दुख व कड़वाहट;(bitterness) हमारे खून में adrenaline की मात्रा को बहुत बड़ा देती है जो कि हृदय को खून की supply कम कर देती हैं व खून में white cells, जो कि बिमारी से लड़तें हैं, कम कर देती है।

इसके विपरीत हर हाल में खुश रहना व हर किसी के प्रति कृतज्ञ व संतुष्ट रहना खुशी प्रदान करने वाले hormones को बढ़ाते हैं व नाखुश करने वाले hormones को कम करते हैं जो कि आपके जीवन को स्वस्थ बनाते हैं व आयु को बढ़ाते हैं। किसी ने सत्य कहा है आन्नद संतोष से पैदा होता है। यह सत्य कथा इस बात को दर्शा रही है कि हमारी सोच ही हमारे जीवन में कितना बड़ा फर्क ला सकती है।

एक बड़ा साहित्यकार रोबिन्सन क्रुसो एक बार एक समुद्री जहाज की भयंकर दुर्घटना में जीवित बच गया पर एक टापू जहां रेत ही रेत थी में खो गया। वह कैसे वहां से निकल सका इस बारे में लिखता है।

'' मैने एक लिस्ट बनाई। क्या बातें मेरे लिये अच्छी थी मेरे लिये उत्साह देने वाली थी एक तरफ लिख दी व क्या बातें मेरे लिये निराश करने वाली थी दूसरी तरफ लिख दी।

मैं एक मरूस्थल मे फंसा हूं जहां रेत ही रेत है, मुझे निराश कर रही है। जो जहाज में सवार थे वे सब मारे गये पर मैं जीवित हूं यह बात उत्साह दे रही है।''

आगे लिखता है, '' मैं अकेला हूं यह सोच निराश कर रही है, पर मैं भूखा नहीं मर रहा यह उत्साह दे रही है क्योंकि दुर्घटनाग्रस्त जहाज पास ही है वहां से खाने का सामान ले आउंगा।''

''मेरे पास कपड़े नहीं है यह कमी अखर रही है पर यहां इतनी गर्मी है कि कपड़ो की आवश्यकता ही नहीं, यह बात सुखद है।''

''मेरे पास अपने को खतरनाक जानवरों से बचाने के लिये कोई हथियार नहीं, यह सोच चिन्तित कर रही है, पर उस समुद्री तट पर खतरनाक जानवर नहीं हैं इस बात ने चिन्ता दूर कर दी।''

रोबिन्सन क्रुसो ऐसी निराशाजनक हालत से भी बच कर बाहर निकल आये। अन्त मे रोबिन्सन क्रुसो लिखते हैं कि दुनिया में कोई भी स्थिति इतनी खराब नहीं कि हमारे पास ईश्वर का धन्यवाद करने का कोई कारण न हो । हर स्थिती में आशा की किरण होती है पर उसे देखने के लिये सोच वैसी ही बनानी पड़ती है।

जरा अखबार के obituaries column पर नज़र घुमायें। आप देखेगें बहुत से व्यक्ति ऐसे हैं जो आप से कम आयु में ही इस दुनिया से चले गये। अगर कृतज्ञता भाव से सोचेगें जो अपने आपको भागयशाली महसूस करेंगे व ईश्वर का धन्यवाद करेंगे यह अलग बात है कि कुछ 80 साल से उपर की ऐसी मातायें भी मिल जायेंगी जो ऐसी कहती मिलेंगी––पता नहीं रब ने इह सब दसन नूं इनी उमर कानू दे दिती, चगां हुंदा पहलां चक लैंदा।

इसलिये हर परिस्थिती में जो बातें आपके हक में है उन की तरफ ही ध्यान दें व ईश्वर का धन्यवाद करने रहें। न केवल आप मुश्किलों पर काबू पा लेंगे पर परम आनन्द की स्थिती में रहेंगें।

Chandigarh - 9217970381

*****

दो घोड़े

अगर दूसरों के बारे में सोचने की आदत है, तो ईश्वर किसी घंटी वाले घोड़े को हमारी सहायता के लिये भेज देगा।

कई बार आते जाते मैं अक्सर एक खेत में दो घोड़ों को सदैव एक साथ देखता था। एक बार मैं उत्सुक होकर उनके पास चला गया। क्या देखता हूं कि एक घोड़ा अन्धा है व देख नहीं सकता। पर उसके मालिक ने उसको छोड़ नहीं दिया था उसके लिये भी अच्छा अस्तबल बनाया हुआ था।

कुछ देर बाद क्या देखता हूं कि पास से ही घंटी की आवाज आ रही है। आस पास देखा तो पता लगा कि यह आवाज पास में ही दूसरे घोड़े से आ रही थी जो कि उससे थोड़ा छोटा था। उसके पास जा कर देंखा तो पता लगा कि उसके मालिक ने उसके गले में घंटी बांध रखी थी ताकी बड़ा घोड़ा, जो कि देख नहीं सकता था, इस छोटे घोड़े की आवाज को सुनकर उसके साथ ही रहे। कुछ देर खड़ा रहा तो क्या देखा कि घंटी वाला घोड़ा अन्धे घोड़े पर नज़र रखता है व इस बात का ख्याल रखता है कि यह घंटी की आवाज सुनकर उसके साथ ही रहे, और इस बात का ख्याल जब तक शाम को वे दोनो अस्तबल में इकटठे वापिस न आ जाये तब तक रखता था। इस अन्धे घोड़े के मालिक की तरह हमारा भी यह कर्तव्य बनता है कि जो हमारी तरह भाग्यशाली नहीं हैं उनके बारे में सोचे व उनकी ज़रूरत के अनुसार जीवन जीने के साधन अपनी शक्ती अनुसार बनाने का प्रयत्न करें।

जीवन काफी बड़ा, उतार चड़ाब व विषमताओं से भरा है। हो सकता है कि कहीं हम घंटी वाले घोड़े हो तो दूसरी जगह अन्धे घोड़े की तरह। पर अगर दूसरों के बारे में सोचने की आदत है तो जीवन हर हालत में हंसते खेलते कट जायेगा और जब हम अन्धे घोड़े की तरह होंगे तो ईश्वर किसी घंटी वाले घोड़े को हमारी सहायता के लिये भेज देगा।

यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् –यज्ञ से जीवन सफल होता है।

अम्बाराम आर्य

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने यज्ञों को करने में बहुत बल दिया है। महर्षि पंचमहायज्ञों का करना मनुष्यमात्र का कर्तव्य मानते हैं। यज्ञ – संस्कृत के यज धातु से बना है। य दो अक्षरों के मेल से बना है, इ और अ – इ का अर्थ है गति तथा अ का अर्थ है पूर्ण । ज का अर्थ है उत्पन्न करना अर्थात् पूर्ण गति उत्पन्न करना अर्थात् देवपूजा करना, संगति करना और दान देना।

देवपूजा – देव दो प्रकार के कहे जाते हैं चेतन और अचेतन । चेतन देव – मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव, पत्नी के लिए पति और पति के लिए पत्नी तथा परमेश्वर । शतपथ ब्राह्मण के अनुसार विद्वांसो हि देवाः अर्थात् सत्यधारी विद्वान् ही देव कहाते हैं। दानाद्वा, दीपनाद्वा, दीपननाद्वा अर्थात् जो दान देते हैं, जो ज्ञानी हैं, जो ज्ञान का प्रसारण करते हैं वे देव कहाते हैं। इनका श्रद्धा से जो तर्पण अर्थात् सेवा सुश्रुषा करके तृप्त करना है उसको देवपूजा कहते हैं। अचेतन अर्थात् जड देवता भी हैं जिनसे हम उपकार लेते हैं जैसे सूर्य, चन्द्रमा इत्यादि। संगति करना अर्थात अपने से बराबर वालों के साथ मिलजुलकर रहना तथा विद्वानों की संगति करना तथा वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय इत्यादि। दान देना अर्थात् ज्ञान का प्रसार, अपने से छोटों को देना इत्यादि। इतना केवल समझने के लिए संकेत मात्र लिखा जाता है।

इस लेख का मुख्य विषय यज्ञ–हवन अथवा अग्निहोत्र इसे देवयज्ञ भी कहा जाता है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखा है जिस कर्म में अग्नि वा परमेश्वर के लिये, जल और पवन की शुद्धि वा ईश्वर की आज्ञापालन के अर्थ, होत्र हवन अर्थात् दान करते हैं, उसे अग्निहोत्र कहते हैं। महर्षि निम्नलिखित वेद मंत्रों को अग्निहोत्र के प्रतिष्ठापन में प्रस्तुत करते हुये लिखते हैः–

1. हे मनुष्यो! तुम लोग वायु, औषधी और वर्षाजल की शुद्धि से, सबके उपकार के अर्थ घृतादि शुद्ध वस्तुओं और समिधा अर्थात् आम वा ढाक आदि काष्ठों से अतिरूप अग्नि को नित्य प्रकाशमान करो। फिर उस अग्नि में होम करने के योग्य पुष्ट, मधुर, सुगन्धित अर्थात् दुग्ध, घृत, शर्करा, गुड केशर, कस्तुरी आदि और रोगनाशक जो सोमलता आदि सब प्रकार से शुद्ध द्रव्य हैं, उनका अच्छी प्रकार नित्य अग्निहोत्र करके सबका उपकार करो। ।।यजुर्वेद 3।1।।
2. अग्निहोत्र करनेवाला मनुष्य ऐसी इच्छा करे, कि मै, प्राणियों के उपकार करनेवाले पदार्थों को पवन और मेघमण्डल में पहुंचाने के लिये अग्नि को सेवक की नाईं अपने सामने स्थापन करता हूँ। क्योंकि वह अग्नि हव्य अर्थात् होम करने के योग्य वस्तुओं को अन्य देश में पहुंचानेवाला है। इसी से उसका नाम 'हव्यवाट्' है। जो उस अग्निहोत्र को जानना चाहें, उनको मैं उपदेश करता हूँ कि वह अग्नि उस अग्निहोत्र कर्म्म में पवन औऱ वर्षाजल की शुद्धि से इस संसार में श्रेष्ठ गुणों को पहुंचाता है। ।।यजुर्वेद 22।17।।
3. प्रतिदिन प्रातःकाल श्रेष्ठ उपासना को प्राप्त यह गृहपति अर्थात् घर और आत्मा का रक्षक भौतिक अग्नि और परमेश्वर आरोग्य, आनन्द और वसु अर्थात् धन देनेवाला है। इत्यादि ।।अथर्ववेद 19।7।3।।
4. अग्निहोत्र करते हुए हम लोग सौ हेमन्त ऋतु व्यतीत हो जाने पर्यन्त अर्थात् सौ वर्ष तक, धनादि पदार्थों से वृद्धि को प्राप्त हों। ।।अथर्ववेद 19।7।4।।
5. इतने ही से समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म हो के फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाय।
6. आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिए एक वर्ष में

10000 रूपये में घृतादि का जिस रीति से होम हुआ था, उसी रीति से प्रति वर्ष होम कराइये। परन्तु उनमें से 5000 रूपये के सुगन्धित घृत–मोहनभोग का होम वर्षा ही में–कि जिस दिन वर्षा का आर्द्रा नक्षत्र लगे उस दिन से लेके विजय दशमी तक–चारों वेदों के ब्राह्मणों का वरण करा एक सुपरीक्षित धार्मिक पुरूष उन पर रख के होम करायेगा और इस लेख को यथावत् सफल कीजिएगा। ऋर्षि दयानन्द के पत्र एवं विज्ञापन पत्र 486, पृ0449

7. होम–हवन से वायु शुद्ध होकर सुवृष्टि होती है, उससे शरीर नीरोग और बुद्धि विशद होती है। ।।पूना प्रवचन।।

8. सुवृष्टि और वायु शुद्धि होम–हवनादि से होती है। इसलिए होम–हवनादि करना चाहिए। पूना प्रवचन।।

9. जो होम करने के हव्य अग्नि में डाले जाते हैं उससे धुआँ और भाप उत्पन्न होते हैं क्योंकि अग्नि का यही स्वभाव है कि पदार्थों में प्रवेश करके उनको छिन्न–भिन्न कर देता है, फिर वे हल्के हो के वायु के साथ उपर आकाश में चढ जाते हैं, उनमें जितना जल का अंश है वह भाप ;वारूपद्ध कहाता है और जो शुष्क है वह पृथ्वी का भाग है, उन दोनों के योग का नाम धूम है। जब ये परमाणु मेघमंडल में वायु के आधार से रहते हैं, फिर वे परस्पर मिल के बादल होके उससे वृष्टि से औषधि, औषधियों से अन्न, अन्न से धातु। ।।पूना प्रवचन।। महर्षि ने अनेकत्र अपने ग्रन्थों में यज्ञ–हवन की महिमा का व्याख्यान किया है।

1. घृतवती वेदवाणी के द्वारा आहुति देते हुए हम अग्नि, वायु आदि सब देवों का लक्ष्य करके यज्ञ करते हैं। मन्त्रोचारणपूर्वक घृत की आहुति देते हुए हमसे देवों–प्राकृतिक शक्तियों की अनुकूलता का सम्पादन करते हैं। इन यज्ञों के द्वारा हम घरों में शान्तिपूर्वक निवास करनेवाले हों जोकि लोभ से रहित–चाहने योग्य सभी वस्तुओं से युक्त हैं तथा प्रशस्त गौओं से युक्त हैं। ।।अथर्ववेद 3/10/11।।

2. यदि यह रोगी क्षीण जीवनवाला हो गया हो, अथवा यह रोगों में दूर चला गया हो, यदि मृत्यु के समीप ले जाया गया है, अर्थात् एकदम मरणासन्न हो तो भी उस रोगी को दुर्गति मृत्यु की गोद से मैं वापस ले आता हूँ। हवि के द्वारा मैं इसे रोगों से मुक्त कर देता हूँ अथवा इसे छूता हूँ और छूकर रोग–निवृत करता हूँ। ।।अथर्ववेद 3/11/2।।

3. भोपाल में गैस त्रासदी के बारे में सभी जानते हैं। कुशवाहा परिवार ने रात में ही यज्ञ–हवन किया जिससे उनके परिवार को किसी भी प्रकार की हानि नहीं हुई।

4. डा0 फुन्दनलाल अग्निहोत्री जी से यज्ञ–हवन से सैंकडों टी0बी0 मरीजों को स्वस्थ किया। उन्होंने इस बारे में यज्ञ चिकित्सा नाम से एक पुस्तक का प्रकाशन भी किया है।

महर्षि एक वैज्ञानिक भी हैं। उनका कथन है कि अग्निहोत्र एक विज्ञान है। महर्षि का कथन वेदादि शास्त्रों के अनुकूल है। हमको साकारात्मक सोच यज्ञ के प्रति बनाना आवश्यक है न कि नाकारात्मक। इसी कारण हर शुभ कार्य के प्रारम्भ में यज्ञ अवश्य होता है। अधिक से अधिक लोग यज्ञ–हवन के आयोजन पर एकत्रित होते हैं। यह एक सुनहरा अवसर होता है कि लोगों को एकत्रित करने तथा अपनी बात लोगों के समक्ष रखने तथा सुधार कार्य या योजना पर विचार विमर्श करना। यह वेद प्रचार के लिए अत्युत्तम सुअवसर होता है। जब मैं नौकरी में था तो हमने कोटद्वार आर्यसमाज की ओर से पारिवारिक यज्ञों का आयोजन लगातार किया इससे क्रान्तिकारी परिणाम देखने को मिले। वैदिक धर्म के प्रति लोगों की रूचि बढी। लोग आर्यसमाज को सुनना चाहते हैं और अपने में सुधार भी लाना चाहते हैं परन्तु दासतां कहते–कहते हमीं सो गये या अपने ऋषि के बताए मार्ग को छोडकर पद प्रतिष्ठा भौतिकवाद को ही सब कुछ समझने लग गये।

जब से मैंने यज्ञ–हवन प्रातः सायं करना प्रारम्भ किया तब से मैं ईश्वर के प्रति समर्पित सा हो गया हूँ। मैंने कई लेख और कई पुस्तकें जो यज्ञ–हवन पर विद्वानों द्वारा लिखी गई हैं उनका अध्ययन किया। इसमें दो ग्रन्थों का मेरे हृदय में काफी प्रभाव पडा हैं। पं0 वीरसेन वेदविज्ञानाचार्य द्वारा लिखी याज्ञिक आचार संहिता तथा स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती त्रिवेदतीर्थ द्वारा शंका समाधान।

जिस व्यक्ति को परमात्मा ने सुख समृद्धि दी है वह यदि यज्ञ–हवन और अन्य परोपकार का कार्य नहीं करता है तो वह परमपिता परमात्मा व सृष्टि के प्रति कृतघ्न ही कहा जाना चाहिए।

परिवार में सुख–शान्ति चाहते हैं तो यज्ञ–हवन करें। संसार का उपकार करना चाहते हैं तो नित्य यज्ञ करें। परमपिता परमात्मा की कृपा चाहते हैं तो नित्य यज्ञ करे।

लेखक सिद्धान्त शास्त्री हैं, हिम्मतपुर मल्ला, हरिपुर नायक हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड

09557004794

Inspiration and perspiration

I.M. Soni

Man spends almost one-third of his life at work. His attitude to it matters. If he looks upon it as drudgery, he drags his feet to it. If he looks upon it as a delight, he goes to it with a spring in his step. Charles M Schwab has observed: “The man who does not work for the love of work but only for money is not likely to make money, nor find much fun in life.”

There is no development physically or intellectually without effort, and effort means hard work. Work is a close kin of happiness, because it gives one deep satisfaction from accomplishment, and makes him savour his leisure. An endless stretch of leisure would be intolerably boring, causing unhappiness. The pleasure derived from hard work is the sweetest of all pleasures.

Geniuses have achieved heights of glory not from fitful spells of divine inspiration, but from relentless perspiration. The highest genius has the ability and willingness to work hard. A great work in any field matures only when extraordinary effort has gone into it. As Sam Ewing put it: Hard work spotlights the character of people: Some turn up their sleeves, some turn up their noses, and some don't turn up at all. Even a simple thought is not rendered into writing without effort. Achievements that surpass the ordinary require great physical and intellectual effort. As Thomas J. Watson puts it: “All the problems of the world could be settled easily if men were only willing to think. The trouble is that men very often resort to all sorts of devices in order not to think, because thinking is such hard work.”

Even the effort required by a writer who wants to clothe an old truth in a new attire, is an immense one. Writers who have left prints on the sands of time, worked hard.

The so-called flashes of sudden inspiration are a late link, and a climax, in the chain of diligent effort which has already been put in the venture. The falling of the apple and the law of gravity by Newton, is a classic example. Not many know that Newton had been grappling with the problem for 19 years before the apple episode culminated into the climax.

However, there are no short cuts.

*****

A dad's advice to his daughters.

Ravi Narasimhan

- An incident transpired when daughters arrived at home wearing clothes that were quite revealing. ============ ========= ========= Here is the story as told by one of the daughters: ============ ========= ========= “When we finally arrived, the chauffeur escorted my younger sister and me up to my father's suite. As usual, he was hiding behind the door waiting to scare us. We exchanged many hugs and kisses as we could possibly give in one day. My father took a good look at us. Then he sat me down on his lap and said something that I will never forget. He looked me straight in the eyes and said, “My princess, everything that God made valuable in the world is covered and hard to get to. Where do you find diamonds? Deep down in the ground, covered and protected. Where do you find pearls? Deep down at the bottom of the ocean, covered up and protected in a beautiful shell. Where do you find gold? Way down in the mine, covered over with layers and layers of rock. You've got to work hard to get to them.” He looked at me with serious eyes. “Your body is sacred. You're far more precious than diamonds and pearls, and you should be covered too.” * *

दान देते हुये व दान लेते हुये, बुद्वि का प्रयोग दोनो के लिये लाभकर है

रक्षाबन्धन का पर्व था। बीकानेर नरेश उस दिन दान दक्षिणा चाहने वालों को कुछ न कुछ अवश्य देते थे। एक लम्बी लाइन लगी थी उसी पंक्ति में मदन मोहन मालविय जी भी एक नारियल लेकर खड़े हो गये। धीरे धीरे लाइन छोटी होती जा रही थी। प्रत्येक इच्छुक नरेश को राखी बांधता और नरेश से एक रूपया प्राप्त कर प्रसन्नता से धन्यवाद कर लौट जाता।

अब मालविय जी की बारी आई। वे नरेश के पास पहुंचे। राखी बांधी, नारीयल भेंट किया व संस्कृत में अपने द्वारा रचित आर्शीवाद दिया। नरेश को समझने में देर ना लगी कि यह कोई साधारण दक्षिणा लेने वाला ब्राहमण नहीं है। परिचय जानने की इच्छा व्यकत की। मालुम हुआ कि मदन मोहन मालवीय जी थे। बहुत प्रसन्न हुये और पास में आदर से बिठाया। मालवीय जी ने रसीद बुक सामने रखी, नरेश को जब पता लगा कि यह धन विश्वविद्यालय के लिये एकत्रित किया जा रहा है तो झट से 1000 रूप्या लिख दिया। मालविय जी ने समुचे विश्वविद्यालय की रूप रेखा व नक्शा बिना कुछ बोले नरेश के सामने रख दिया व साथ ही सम्भावित व्यय व इस विश्वविद्यालय का महत्व व भारतीयों को पहुंचने वाले लाभ का विवरण एक छोटी पुस्तिका भी प्रदान की। नरेश ने पढ़ा तो मन्त्र मुग्ध हो गये व सोचने लगे इतने बड़े कार्य में 1000 रूपय से क्या होगा। उन्होने पूर्व लिखित राशी पर दो शुन्य और बढ़ा दिये व कोषाध्यक्ष को एक लाख मुदराये देने का आदेश दिया।

यह घटना दोनो दान लेने व दान देने वालों की बुद्धिमता को बताती है। साथ ही यह भी बताती है कि जो व्यक्ति किसी समाजिक कार्य के लिये दान मांगता है वह सम्मान का हकदार है।

*****

.चींटी को दाना या आटा देना कितना उचित?

विष्वप्रिय

आपने कई धर्म प्रेमी माताओं–सज्जनों को चींटी के बिल के पास आटा या चीनी आदि रखते देखा होगा। वे जीव दया से प्रेरित इस भाव से यह सब करते हैं कि इस बहाने पुण्य की प्राप्ति होगी। कहने सुनने में यह बात अच्छी लगती है पर विभिन्न पहलूओं पर विचार करने से पता लगता है कि यह कार्य कितना हानिकारक है।

परमपिता परमात्मा ने प्रत्येक प्राणी को जिस स्थान व जिस जलवायु में वह रहता है, उस में जीवित रहने के लिये व अपने जीवन की गाड़ी को आगे ले जाने के लिये, उस के अनुसार, कुछ गुणों से सम्पन्न किया है। कुछ प्राणी ठण्ड बर्फ में रह सकते हैं तो कई झुलसती गर्मी में। कुछ प्राणी शाकाहारी हैं तो कुछ मांसाहारी। कुछ प्राणी जैसे सूअर केचुएं सड़ा हुआ भोजन ही खाते हैं। कुछ प्राणी स्थूल भोजन करते हैं तो कुछ सूक्ष्म। सूक्ष्म भोजन करने वालों में चींटी भी एक है जो कि कोने कोने में छिपे व दबे भोजन को खाती है व गंद को नष्ट करने में सहायता करती है। इसी प्रकार परमात्मा ने प्रत्येक प्राणी को अपने बचाव के लिये अलग अलग साधन दिये हैं, किसी को विष दिया है तो किसी को सींग दिये हैं और किसी को दौड़ने की क्षमता तो किसी को बुद्वि दी।

जैसा मैने उपर कहा चींटी कोने कोने में छिपे व दबे भोजन को खाती है, गंद को नष्ट करने में सहायता करती है व बिमारी के भय को खत्म करती है। यह कार्य दूसरा कोई प्राणी नहीं कर सकता। ऐसे में यदि हम चींटी के बिल के पास कोई खाने की चीज रखते हैं जो चींटी अपने स्वभाविक खाने को छोड़ पहले पास रखे भोजन को खाती है। नतीजा प्रकृति द्वारा बनायी एक किया को हमने अपनी हरकत द्वारा नुकसान पहुंचाया । जरा सोचिये ऐसा पुण्य किस लाभ का?

पाठशाला

अशोक कुमार

जिस प्रकार सूर्य संसार को प्रकाश और ऊर्जा से आलंकित और गरिमा प्रदान करता है उसी प्रकार मनुष्य जीवन में पाठशाला की महत्वपूर्ण भूमिका है। जिससे शक्ति ज्ञान प्रेरणा मिलती है जहाँ शिक्षा-विद्या सीखी जाती है। विद्या की किरणों से ज्ञान उज्जवलता फैलती है, जिसे महसूस किया जा सकता है, पूछो उनसे जो विद्या और स्कूल से वंचित रह गये और ये उनके लिए सपना रहा। उनके जीवन में अनपढ़ता का अन्धेरा कैंसर बना। भारत में विद्या को माता का दर्जा दिया गया है। और विद्या की गोद में आ कर मनुष्य अज्ञानता के अन्धकार की गलियों से निकलकर, जाग्रति और मनुष्यता का अमृतपान करता है, मस्तिष्क का शुद्धिकरण होता है और ह्यता, सहानुभुति संस्कारों का बीजा-रोपण होता है। पाठशाला ऐसा शिक्षा स्थल है, जहां से देश समाज की प्रगति, समृद्धि, विकास के लिए सम्बल पुरूष निकलते है, जहां शिशु काल से शिक्षा प्रसार वितरण आरम्भ हो जाता है। परिवार के पश्चात पाठशाला दूसरे स्थान पर आती है। परिवार में प्रारम्भिक, मौखिक, संकेतिक, जीभ-परिवर्तन, शब्द उच्चारण सिखा जाता है। परिस्थितियों से अवगत हुआ जाता है। पहचान प्रव्रिती विकास होता है पर घर की शिक्षा अपूर्ण है क्योंकि अक्षर ज्ञान नहीं होता। इसीलिए शिशु को पाठशाला, जिसे विद्या का मंदिर, ज्ञान का सरोवर, आचार-शिष्टाचार और संस्कृति का शिलास्थल कहा जाता है में भेजा जाता है जहां पूर्णतय व्यक्तित्व विकास होता है, श्रैष्ठ व्यवहार, सर्व पक्षियें विषयों का पता चलता है। इसके अतिरिक्त पाठशाला में मार्ग-दिशा-निर्देशन, पाप-पुण्य, सिद्धान्त दर्शन का पता चलता है। यहां पर प्राचीनता, उन्नत इतिहास, सहित्य, सस्कृति सभ्यता का ज्ञान, विज्ञान, गणित, अर्दशता, मर्यादाओं, आदि की गरिमा महसूस होती है और सीखा जाता है। इन्ही उपकरणों से मानव चरित्र स्वभाव, व्यक्तित्व को तराशा जाता है जिस हेतु महापुरूष, युगपुरूष, देवदुत, समाजसेवी बनते है। इस प्रकार पाठशाला में बुद्धि अंकुर-पौधे तैयार होकर बुद्धि वृक्ष बनकर समाज में ज्ञान के फल-फूल, अमृत वितरण करते है। ज्ञान की ज्योति से प्रेम-धर्म प्रकाश कर समाज को स्वर्ग बनाते हैं। पाठशाला में ही आन्तरिक नैत्रता उजागर होती है। छुपी प्रतिभा संजीवन होती है। गुणकारी प्रेरणा उपजती है।

प्राचीनकाल में छात्र गुरूकुलों, आश्रमों में गुरू के पास रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। प्राचीन भारत में नालंदा, तक्षिला विश्वविख्यात शिक्षा केन्द्र थे। उस समय शिक्षा वेदों के ज्ञान, साहित्य की महिमा और संस्कृतिक मूल्यों, योग दर्शन, गणित, चिकित्सा और धर्म आचरण पर आधारित थी । मुख्य उद्देश्य था बौद्धिक, शारीरिक व अध्यात्मिक विकास। प्रश्न उठता है क्या वर्तमान पाठशालाओं भी प्राचीन मूल्यों पर अधारित हैं? इसका उत्तर है नहीं। शायद ही किसी पाठशाला में शस्त्र प्रयोग, देशभक्ति, राष्ट्रीयता, शिष्टाचार, नैतिकता व सत्य आचरण का पालन व भ्रष्टाचार विरोधता, नशा, वैश्यवृतियॉं जैसी बुराईयों से दूर रहने पर निवार्यता दिखाई जाती है। क्या जीवन जीने की कला बताई जाती हैं, क्या बताया जाता है जीवन हर्षोउल्लास से कैसे जीना है? क्या तप, साधना, सादगी, सहनशीलता, त्याग कृतिज्ञता, आचरण, चरित्र, गुरू, माता-पिता आदर, आदि विषयों को पठ्यक्रमों में शामिल किया है।

आजकल पाठशालाऐं व्यापारिक केन्द्र बन गई है, मुख्य उद्देश्य धन कमाना रह गया है मोटी प्रवेश शुल्क राशि ली जाती है। अधिक विद्यार्थी आकर्षण के लिए समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर आम जनता को गुमराह किया जा रहा है। एक विज्ञापन में लिखा था - आपका शिशु एक अद्वितिया है उसका ज्ञान हम बढ़ायेंगे और ज्ञान-वर्धक विधि सुझाई थी 'स्कूल में भव्य ईमारत, मैदान, कला-नृत्य, गान-विद्या, सुर, वाद्यय-संगीत, स्कैटिंग रिंग, प्रयोगशाला, विश्वज्ञान कोष पुस्तकालय और युक्ति आधारित ज्ञान, विद्योपार्जन, संचार विषय, अभिनय कक्षाऐं और विज्ञान, ज्ञान, गणित, प्रयोगशाला का श्रैष्ट प्रबन्ध है। इसके अतिरिक्त विज्ञापन में अंग्रेजी भाषा में पूर्णतः प्राप्ती का दावा, यहॉं तक कि पाठशालाओं के नाम पाश्चात्य, गुरूओं, साहितकों, संतों पर रख दिए जाते है। यह पढ़कर मन को आघात होता है। विज्ञापन में भारतीयता के किसी भी गुण को स्पर्श नहीं किया और न ही भारतीय भाषा शैली की वृद्धि को अनिवार्य समझा जाता है। केवल स्कूल प्राप्तियों की तालिका बना रखी थी प्रश्न उठता है क्या वहां से निकले डॉक्टरों ने समाज में निशुल्क रोगियों की सेवा की? क्या विदेशों में प्रस्थान करना बंद किया? कैसी शिक्षा है जो विदेशियों के काम आ रही है जबकि अधिक अवश्यकता भारत में है। क्या विज्ञापन में दिए विषय सदा जीवन में अनिवार्य अंग बनेंगे? क्या उनसे सामाजिकता बढ़ेगी, क्या समाज में मानव धर्म विस्तार होगा, व्यवहार, सोच, व्यवस्था परिवर्तन होगौ। इनसे क्या देश भक्ति, राष्ट्रीयता, चरित्र निर्माण होगा, क्या इनसे भारतीयता संजीवन रहेगी? आवश्यकता है पाठशालाओं में आत्म-निर्भरता, आम आदमी की सुरक्षा सुनिश्चिता, आतंक, अपराध रहित समाज निर्माण की। नम्रता, विश्वास, मानवता संगीत, सहानुभूति पैदा करने की। भेदभाव, जात-पात को समाप्त करने की। स्वामी विवेकानन्द का दिया संदेश, 'बल उपासना, एवं स्वस्थ चेतना, और सूर्य नमस्कार' की जरूरत है। आज अति जरूरी है दयाननंद सरस्वती का दिया संदेश कि 'वैदों का अध्ययन करो'। आज पाठशालाओं में अच्छी शिक्षा के साथ-साथ चिकित्सा, स्वास्थ्य और नैतिक शिक्षा की जरूरत है। पाठशाला में निर्धन छात्राओं को शुल्क रहित प्रवेश और निशुल्क पुस्तकों का वितरण करना चाहिए।

शेष भाग पेज 13 पर....................

Five core spiritual tenets for healthy, harmonious and contended living.

People attend to their roles, responsibilities, relationships and other routines in order to experience and share joy. But how come we see them in tension, stress and discontentment?

One can blame it on our inept belief system. It is misleading to think that more the mundane objects, power and position you possess, the merrier you become. Due to this mindset, you become subservient to materialistic forces and party to conflicts and violence in a vicious circle of slavery to senses and sins.

To come out of this evil cycle, you need to train and transform your consciousness, thoughts, attitude and values from temporal to divine, competitive to cooperative, acquisitive to distributive and from the greedy nature of getting to the pious culture of giving.

You got to enable your inner being to regain its sovereignty over senses, mind, intellect, emotions and passions through regular practice of spiritual wisdom and loving communion with the Supreme Being. By this, you become immune to external forces and enjoy inner peace.

To make such a paradigm shift possible, you need to integrate five core spiritual tenets into your mindset and behavior for healthy, harmonious and contended living.

The first spiritual principle envisages that nothing in this world exists for itself but co-exists for mutual benefits of each other.

The second golden rule emphasises that nothing in the world can be owned but can be used for need fulfillment.

The third tenet reveals that materialism by itself is not the source of human happiness. The ephemeral and negative nature of matter cannot provide real peace.

The fourth principle says it is good karma or virtuous deed which is the true source of peace and happiness.

And the fifth spiritual law considers materialism a good servant but a bad master.

*****

.... पाठशाला का शेष भाग

इस प्रकार गुरू नानक देव जी, महावीर, बुद्ध के बताये मार्ग का अनुसरण करना होगा। उन विषयों की अवश्यकता है जिससे भाईचारे बढ़े, दरिद्रता, दुष्टता, अश्लीलता, अभद्रता, अनिष्टता समाप्त हो। सहनशीलता, प्रेम का वीजा रोपण हो, पाठशाला का वातावरण कारागार किस्म का नहीं होना चाहिए, हरेक बेधड़क अपनी समस्या पाठशाला प्रबंध तक पहुँचा सकें और हृदय में पाठशाला आकृषण प्रकृतिक तौर पर हो।

मैं तो कहूँगा कि हर एक विद्यार्थी के लिए समाज में विकलांग, वृद्ध, रोगियों, असहायों की सेवा करने का विषय पढ़ाना चाहिए और प्रमाण पत्र लेना अनिवार्य हो। हर विद्यार्थी पाठशाला में, प्रवेश से पहले और उपरांत एक संकल्प पत्र दें कि वह शिक्षा, निष्टता से प्राप्त करेगा और अपनी संस्कृति, सम्पदा की सुरक्षा करेगा। पाठशाला के बाद समाज सेवा भी सुनिश्चित करेगा। परीक्षाओं में हेराफेरी नहीं करेगा, प्राप्त शिक्षा का दुरूपयोग नहीं करेगा। पाठशाला का मुख्य उद्देश्य 'शिक्षक-शिक्षार्थी पद्वति सुदृढ़ करना, श्रेष्ट आदर्शों की नींव डालना और विद्यार्थी के अंदर एक सिद्धांत को पैदा करना होगा कि पाठशाला में वो सीखने आयेगा और पाठशाला छोड़ने पर समाज की सेवा करने जायेगा।

पाठशाला का मुख्य दायित्व केवल रोटी रोजी के लिए तैयार करना ही नहीं होना चाहिए बल्कि ऐसे गुणों की उत्पति करना होगा जिससे प्राप्त की हुई शिक्षा से समाज में ज्ञान फैलाये इन्सानियत, सत्यता का प्रचम ऊँचा करे। सरकार का भी कर्तव्य है कि पाठशालाओं का वातावरण हर पहलु से ठीक सुनिश्चित करे, अवैद्य गतिविधियों पर चौकसी तंत्र प्रभावी हो। पाठशालाओं पर सांस्कृतिक विषयों पर चर्चा चिन्तन, विचार-गोष्ठियाँ करनी चाहिए। तभी तो भारत बनेगा महान। सिखाना है पाठशाला को कलम चलाना, खड्ग नहीं, ज्ञान-विज्ञान के पुष्प फैलाती है पाठशाला, आतंक नहीं, छिपा हो पुरूष चाहे जितना भी, वाणी से ज्ञान हो जाता है पाठशाला का।

अशोक कुमार, उप-आबकारी और कर कमीशनर, ;सेवा निवृतद्ध, पंजाब मो. 98789-22336

मांस मनुष्य का भोजन नहीं है

कृष्ण चन्द्र गर्ग

इंग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध लेखक एवम् उपन्यासकार जार्ज बर्नड शा मांस नहीं खाते थे। वे लिखते हैं ''मैं अपने पेट को मरे हुए जानवरों की कबरगाह नहीं बनाना चाहता।''

महाभारत में लिखा है 'जो स्वयं जीना चाहता है वह दूसरों को कैसे मारता है ! मनुष्य जो व्यवहार अपने लिए चाहता है, वही व्यवहार दूसरों के साथ करे।' वेदों में सभी प्राणीयों की रक्षा करने की व दया करने की बात कही गई है, इसलिये जीवों को अपने भोजन के लिये मारने का प्रश्न ही पैदा नही होता। महाभारत मे भीष्म पितामह ने न केवल मासं खाने वाले, बल्कि मासं का व्यापार करने वाले और मासं के लिये जीव की हत्या करने वाले को भी दोषी ठहराया है। इसलिये वैदिक धर्म में शाकाहार(**vegetarian)** आहार को ही सब से अच्छा आहार कहा गया है।

शाकाहार के सेवन से न केवल हमारे विचार साकरात्मक होते हैं, बल्कि दया और धैर्य जैसे गुण भी हमारे अन्दर विकसित होते हैं। जरा सोचिये, अगर हम किसी को प्राण दे नहीं सकते तो किसी के प्राण लेने का भी हमे क्या हक है। इसका भी किसी के पास जवाब नहीं कि अगर किसी मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य के प्राण लेना या उसको मारकर खाना गल्त है तो फिर दूसरे जीवों को मारना या खाना गल्त क्यों नहीं? प्राण तो सभी को प्यारे होते हैं। यदि हम मन,वचन और कर्म से पवित्र होना चाहते हैं तो इसके लिये हमे शाकाहारी आहार यानी कि साग, सब्जी व फल लेने चाहिये। एक बात तो सपष्ट है कि अगर आप मासांहारी है तो आप दयालु नहीं हैं और अगर आप दयालु नहीं हैंतो आप अध्यात्मिक भी नहीं हैं। वेदों में खाने के सम्बन्ध में फल, सब्जियां, अनाज, दूध, घी आदि का ही जिकर है, मांस का नहीं। पशुओं की हर प्रकार से रक्षा की बात की गई है, उनको मारने की नहीं। अगर आप कर्मभोग की doctrine में विश्वास करतें हैं तो मासं खाने का क्या इलज़ाम है यह बताने की आवश्यकता नहीं। अगर हम बिना कसूर के किसी के प्राण लेगें तो हमे फल भोगने के लिये तैयार रहना होगा। दशरथ और श्रवण की कहानी से हम वाकिफ हैं। मांस मनुष्य के लिए शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक दृष्टि से भी हानिकारक है। पशु जब अपने को मारे जाने की स्थिति मे देखते हैं तब उन्हें जो कष्ट होता है उसे याद करके भी मांस नहीं खाना चाहिए।
रामायण में श्री राम, लक्ष्मण, सीता के खाने की जब बात आती है तब कन्द, मूल, फल की ही आती है, मांस की नहीं।

अकबर के शासन सम्बन्धी अब्बुल फजल द्वारा लिखी पुस्तक 'आइने अकबरी' में लिखा है 'मांस पेड़ों पर नहीं लगता और न ही जमीन के अन्दर से निकलता है। यह जीवित पशुओं को मारके बनता है। यह सब्जी या भोजन नहीं है।'

इंग्लैंड के साउथैम्पटन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने 10 वर्ष की आयु से लेकर 30 वर्ष की आयु तक 20 वर्ष तक 8000 नौजवानों का निरीक्षण किया और पाया कि उनमें जो शाकाहारी थे उनका बुद्धिस्तर (I.Q.) मांसाहारियों की अपेक्षा 5 प्रतिशत उँचा था। शोधकर्ताओं ने यह निष्कर्ष भी निकाला है कि शाकाहारियों का ब्लड प्रैशर (B.P.), कोलैस्ट्रौल (cholesterol) और मोटापा मांसाहारियों की अपेक्षा कम होता है। फल, सब्जियां और चोकर समेत अनाज दिमाग को बढ़ाते हैं। शाकाहार भोजन से पशुओं, मनुष्यों और वातावरण को लाभ होता है। अतः शाकाहार भोजन ही बुद्धि और मानवता के अनुकूल है। हृदय रोग विशेष्ज्ञों का मानना है शाकाहारी भोजन जिसमे फल सब्जीयां व wholegrain fibre हो हृदय रोग को दूर रखता है। यही नहीं मासांहारी भोजन शरीर में कैंसर पैदा करने वाले cells को बढ़ाते हैं। Meat based diet is cancer friendly

मांस के सम्बन्ध में मनुस्मृति में आठ लोगों को दोषी माना गया है। मारे जाने के लिए पशु को बेचने वाला, खरीदने वाला, पशु को मारने की आज्ञा देने वाला, मारने वाला, मांस को काटने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला और खाने वाला।

चाणक्य ने कितना ठीक कहा है.——— जिसका हृदय सब जीवों पर दया भाव से द्रवित हो जाता है,उसको ज्ञान, मोक्ष, जटा और भसम लगाने से क्या। अर्थात अगर मन में दया है तो बिना भक्ति किये भी भगवान के नज़दीक हैं। इस विचार से किसी प्राणी को अपने भोजन के लिये मारना ईश्वर को न मानना है।

एक कहावत है ' जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा मन' अगर हम ऐसा अन्न खाते है जिस मे हिसां व किसी की बिना कसूर के प्राण लेने का पाप है तो
हमारा मन और आत्मा भी हिसां व घृणा का घर होगी। जब हम पशुओं को खायेगें तो पशु ही बनेगें।

महर्षि दयानन्द, सन्त कबीर और बाबा नानक ने मांसाहार का घोर विरोध किया है। प्रसिद्ध हस्तियां जो शाकाहारी थीं/हैं – अमिताभ बच्चन, रेखा, मेनका गांधी, मदर ट्रेसा, भाग्यश्री, अनुपम खेर, हेमा मालिनी, पाईथागोरस, प्लैटो, थामस ऐडिसन, अलबर्ट आइंसटन, टॉलस्टाय, मार्टन लूथर किंग, जार्ज बर्नड शा।
गुरू नानक देव ने भी कहा है
उतम समझ के चौका पाया,
जीव मार के मांस चढ़ाया,
जिस चौके ते रिद्धा मास,
दया धर्म दा होया नाश,
गगने पूजे ममने खाये,
कह नानक तू नरकी जायेगा

डाक्टर जोसिमा फील्ड लिखते हैं———'' भूलिये मत ! प्रत्येक जीवित प्राणी जीवन के आनन्द और मरने के भय से परिचित है। वह आप की भाति सुख दुख का अनुभव करता है।''

पश्चिम देशों के मांसाहारियों को अब एक नई बिमारी का पता चला है जिसका नाम है ' मैड काउ डिजीज'। वे कहते हैं कि जब गाय को मारने लगते हैंतब भय के कारण गाय का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है और उस बिगाड़ का प्रभाव उसका मांस खाने वाले मनुष्यों पर भी पड़ता है। ऐसी ही स्थिती अन्य पशुओं को मारने तथा खाने पर भी अवश्य होती होगी।

831, सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा

फोन. 0172—4010679

*****

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values'

To handle yourself, use your head,
To handle others, use your heart.

Good people do not need laws to be told to act responsibly.
While bad people will find a way around the law

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Panjabi
(An ISO 9001-2008 Certified Company)
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager
Mobile No 093161-34239, Landline No-01762-652465
Fax No-01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

दर्द का हद से गुज़रना है,दवा हो जाना

सीताराम गुप्ता

उर्दू के मशहूर शायर मिर्ज़ा असदुल्ला ख़ां 'ग़ालिब' की बेशतर ज़िंदगी बेहद तकलीफ़ में गुज़री। ज़िंदगी भर कर्ज़ के बोझ तले दबे रहे। उनके कई संतानें पैदा तो हुई पर एक भी जीवित न रह सकी। आख़िरकार अपनी बेगम के भांजे को गोद लिया पर वो भी ठेठ जवानी में चल बसा। इन्हीं बेहद ग़मनाक हालात में 'ग़ालिब' ने लिखा :

क़ैदे–हयातो–बंदे–ग़म असल में दोनों एक हैं, मौत से पहले आदमी ग़म से निजात पाए क्यों?

जीवन की यही वास्तविकता है। दुख–दर्द अथवा पीड़ा जीवन का अनिवार्य तत्त्व है। दुख–दर्द अथवा पीड़ा के रूप अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन इससे निजात पाना असंभव है। दर्द से ही सृश्टि का विकास संभव है। प्रसव–पीड़ा से ही मातृत्व का असीम सुख संभव है। प्रसव–पीड़ा के अभाव में संतान के सुख का आनंद ही नहीं अपितु सृश्टि का विकास भी असंभव है। व्यश्टि और समश्टि दोनों के विकास और विस्तार के लिए अनिवार्य तत्त्व है दर्द।

जीवन की ही नहीं हर दिन की शुरूआत भी एक दर्द से ही होती है। उस दर्द के वशीभूत हम सुबह उठते ही सीधे टॉयलेट जाते हैं और ठीक से फारिग होने के बाद सारा दिन प्रसन्नचित्त रहते हैं। जो लोग सुबह के इस दर्द, इस प्रशर से वंचित रह जाते हैं उनका सारा दिन सुस्ती और अकर्मण्यता में बीतता है। इसके अतिरिक्त जीवन में न जाने कितनी तरह के कष्ट हमें उठाने पड़ते हैं। शारीरिक व्याधियां अथवा दुर्घटनाएं हमें जर्जर बना देती हैं लेकिन जैसे ही हम बीमारी अथवा चोट की कसक से उबरने लगते हैं तो सुख की अनुभूति ही होती है।

कई बार ऐसा होता है कि चोट लगते–लगते बच जाते हैं लेकिन उसके संभावित परिणाम की चिंता व आशंका से व्याकुल अथवा त्रस्त हो उठते हैं जो कई बार लंबे समय तक व्याप्त रहती है। ऐसी घटनाओं से कोई प्रेरणा अथवा कोई सुख नहीं मिलता जबकि सचमुच की दुर्घटनाओं से हम बहुत कुछ सीख पाते हैं और उनकी कसक कम या समाप्त होने पर सुख की अनुभूति भी अनिवार्य रूप से होती ही है। रुग्णता के उपरांत रोगमुक्ति अथवा अच्छा स्वास्थ्य हमारे आनंद का कारण बनता है।

यह तो हुआ देह की पीड़ा से उत्पन्न आनंद। दुख–दर्द और कष्ट शारीरिक ही नहीं मानसिक भी कम नहीं होते अपितु ज़्यादा ही होते हैं। किसी ने अपमान कर दिया तो तिलमिला कर रह जाते हैं। मुख मलिन ओर कंठ शुष्क हो जाता हैं तथा शरीर में हानिकारक रसायनों अथवा हार्मोंस का उत्सर्जन प्रारंभ हो जाता है लेकिन जैसे ही इस अवस्था से उबरने लगते हैं अथवा किसी मानसिक आघात का प्रकोप कम होने लगता है हमारी शरीरिक अवस्था भी बदलने लगती है। तनाव कम होने लगता है। घटता तनाव और दबाव ही प्रसन्नता का कारण बनता है। तनाव और दबाव न होने से उतनी प्रसन्नता नहीं होती जितनी तनाव और दबाव से मुक्त होने में होती है।

दर्द से बचाव में नहीं दर्द को पार कर जाने में है वास्तविक प्रसन्नता और विकास। जैसे–जैसे हम दुखों के पहाड़ को पार करते जाते हैं हममें अतिरिक्त आत्मविश्वास उत्पन्न होने लगता है और यही अतिरिक्त आत्मविष्वास हमारे त्वरित विकास के लिए अनिवार्य है। जिसमें उबड़–खाबड़ रास्ते और ऊंची–नीची सड़कें पार करने का साहस और क्षमता नहीं वह विशाल पर्वतों की गगनचुंबी चोटियों को कैसे पार कर सकेगा? कंपकंपाती सर्दी जिसने सहन कर ली वही वसंत का आनंद लेगा। ग्रीष्म की चिलचिलाती धूप और ऊष्मा ही आनंददायक वर्षा के आगमन का कारण बनती है और उससे राहत भी प्रदान करती है।

फिर भी हम सब अभावों और दुख की शिकायत करते हैं पर क्यों? जिसने दुख नहीं देखा, सुख ही सुख देखा है, तनिक से दुख के आघात से

Justice and mercy

Harsh Mander

Recently, Mr Harsh Mander, a well known Column writer, in his

article---'Avoid the hate trap' in HT, raised a very thought provoking issue by citing the example set by the Arya Samaj founder Swami Dayanand, who in his last act in 1883 forgave his killer, and helped him escape. Swami Daynand was poisoned by a cook, part of a conspiracy of persons opposed to his Hindu social reforms. The cook confessed,

and Dayanand gave a bag of money to help him escape before he died.

Further Mr. Harsh writes that the time has come when people the world over are challenged to discover new ways to respond to people we believe caused us grave harm. Punishment is important to deter and discourage crime. But we may also find that rage; revenge and hate trap us no less than those who have caused us suffering and loss. We need to find public spaces for both justice and forgiveness. Justice is critical, but if we learn to temper justice with compassion, the world may become a kinder, fairer and safer place for all.

I personally feel that not everybody can do what Swami Dayanand could do simply because he was a great yogi who by adhering

religiously to Yam and Niyam, as prescribed by sage Patanjali and by communion with God had cleansed his mind from prejudices, grouses, biases, anger and jealousness. Such a mind has no place for hatred.

Again he could do it because of his absolute faith in God and complete submission to Him. This is best manifested by his last words------"Oh

God, I submit to your will". Ishavasya Upanishad says He who sees the entire world of animate and inanimate objects in himself and also sees himself in all animate and inanimate objects, because of this, does not hate anyone.

*****

टूट जाएगा लेकिन जो बार–बार टूट कर जुड़ना सीख जाता है उसे कोई दुख स्थाई रूप से नहीं तोड़े रख सकता। बरतनों को साफ करने और चमकाने के लिए उन्हें रगड़ना और मांजना पड़ता है। बकौल 'अज्ञेय' दुख ही हम सबको मांजता है। दर्द परिमार्जक है। दर्द उद्धारक है। दर्द ही हमारा मार्ग प्रशस्त करता है। दर्द ही हमें जीवन में दीक्षित करता है। दर्द सर्वोत्तम शिक्षक है।

दर्द ने इंसान को इंसान बनाया। दर्द न होता तो संवेदना न होती और संवेदना न होती तो इंसानीयत न होती। स्वयं की ही नहीं अपने परिजनों व दूसरों की पीड़ा भी हमारे लिए उत्प्रेरक का काम करती है। इसी पीड़ा ने असदुल्ला ख़ां को 'ग़ालिब' बनाया। इसी पीड़ा ने मोहनदास को 'गांधी' बनाया। इसी पीड़ा ने बाबा आमटे को अभय साधक बनाया। इसी पीड़ा ने दशरथ माझी को पहाड़ काट कर अपने गांव को शहर के निकट लाने के लिए विवश कर दिया। दर्द उपयोगी है। दर्द सर्जक है। दर्द से छुटकारा असंभव है। दर्द से पलायन बेमानी है। दर्द को बढ़ने दीजिए, उसे हद से गुज़रने दीजिए। 'ग़ालिब' ने ठीक ही कहा है :

इश्रते–क़तरा है दरिया में फ़ना हो जाना,
दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,दिल्ली–110034फोन नं. 011–27313679 / 9555622323

अभी, या फिर कभी नही
(मेरे एक मित्र द्वारा बताई सत्य कथा पर आधारित)

भारतेन्दु सूद

मेरे एक चाचा जिनकी आयु 80 से भी उपर थी बहुत अमीर थे। मेरी चाची जी का देहान्त बहुत पहले हो चुका था व चाचा जी के दो बेटे ही थे जो कि विदेश में बस गये थे। चाचा जी अपने व्यवसाय व जायदाद आदि से इतना अधिक जुड़ गये थे कि उनको लिये यह सम्भव नहीं था कि यह सब छोड़ कर अपने बेटों के पास विदेश में रहें और न ही बेटों के लिये यह सम्भव था कि अपना विदेशों का कारोवार छोड़कर अपने पिता के पास रहें।

अव मैं जब सेवानिवृति (**retirement**) के बाद लगभग काम के भार से मुक्त महसूस कर रहा था, मैं उन्हें प्राकृतिक ईलाज (**naturopathy** के लिये केरल के एक बड़े अस्पताल में ले गया। जो व्यक्ति अपने व्यवसाय से बहुत अधिक जुडा हुआ था अचानक यह महमूस करने लगा कि भौतिक उन्नति प्राप्त करने की होड़ में उसने बहुत कुछ खो भी दिया और अक्सर वह दुनियादारी की इन सब चीजों से सन्यास लेने की बात करते।

एक दिन उन्होने अचानक वापिस जाने की इच्छा व्यक्त की और हम टिक्ट लेकर हवाई अडडे पहुंच गये। उड़ान में देरी थी इसलिये हम प्रतिक्षालय में बैठ गये। उन्होने मुझे बुलाया और कहने लगे––––''मैं अपना वसीयतनामा बनाना चाहता हूं। अपनी दिल्ली वाले बंगले को छोड़कर मैं बाकी सारी जायदाद का, जिसका मूल्य 300 करोड़ के करीब है, गरीब बच्चों की पढ़ाई के लिये एक **trust** संस्था बनाना चाहता हू और क्योंकिं अब तुम सेवा निबृत हो चुके हो इसलिये मैं चाहता हू कि इस संस्था का काम काज तुम देखो।'' वह इतनी जल्दी में थे कि उन्होने मुझे वहीं बैठे वसीयतनामा बनाने का आदेश दिया।

मैंने एक कागज़ पर उनके आदेशनुसार वसीयतनामा बनाया और उन्हें पढ़ने के लिये देने वाला ही था कि उढ़ान के **security check up** की घोषणा हो गई। मैने सोचा कि उनको उढ़ान के दौरान पढ़ने को दे दूंगा ताकी वह इसे अच्छी तरह पढ़ कर ही हस्ताक्षर करें। जैसे ही हम हवाई जहाज में बैठे उनकी आंख लग गई, उनकी आंख तब खुली जब हम दिल्ली पहुंच चुके थे। उन्हें लेने उनके नौकर आये हुये थे मैं भी अपने घर पहुंचने की जल्दी में था इसलिये मैने अगली बस से अपने घर के लिये प्रस्थान किया।

घर पहुंचकर मैने वसीयतनामा बनाने के लिये अपने एक वकील मित्र की मदद लेना ठीक समझा ताकी वसीयतनामा में कोई कमी न रह जाये। जैसे ही मैं वसीयतनामा बनवा कर धर पहुंचा था कि चाचा जी के घर से फोन पर सूचना मिली कि चाचा जी स्वर्ग सीधार गये हैं।

उठाले वाले दिन जब रस्म पगड़ी खत्म हुई तो मैं उनके बड़े बेटे रमन के पास गया, अफसोस संदेश देने के बाद मैने उसे बताया कि ––––''शायद चाचा जी को अपने अन्त समय का ऐहसास हो गया था और उन्होने मुझे वसीयतनामा बनाने को कहा था।''

इससे पहले मैं अपनी बात पूरी करता, रमन झट से बोला––––'' बाबू जी अपने मरने से पहले वसीयतनामा कर गये हैं, और अपनी सारी जायदाद हम दो भाईयों के नाम कर दी है। वास्तब में आपने जो अपना समय उन्हे दिया उसके लिये मैं आपका धन्यवाद करना चाहता था।'' रमन कुछ देर रूका और वोला–––'' मैं समझता हूं आपके पास काफी समय है, अगर आप इस जायदाद को जो कि कई स्थानों पर बिखरी है, बिकवाने में मदत कर सके तो बहुत अच्छा होगा। इससे हमें 400 करोड़ के करीब

शेष भाग पेज 19 पर ....

यज्ञ–परिवर्तन के अच्छे संकेत

जब से डी ए वी संस्थाओं की बागडोर श्री आन्नद स्वामी के पोत्र श्री पूनम सूरी ने सम्भाली है, संस्था के हर उत्सव में समाज के गरीब व्यक्तियों को कम्बल, साईकल, सिलाई मशीने आदी बांटने की प्रथा शुरू की गई हैं। संस्थाओं के लिये यज्ञ यही हैं जिनसे सारे समाज का लाभ हो। घर में आप द्वारा हवन हो व समाज ऐसे यज्ञ करे तो लोग फिर से आर्य समाज की और झुकेंगे।

1 डी.ए.वी. कोटा द्वारा एक समारोह में 100 साधनहीन निर्धनं परिवारों को कम्बल और महिलाओं को सिलाई मशीने तथा विकलांग को तिपहीया साईकिलें दी गई।

2 आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव ने 53000 रूपये का सामान अति निर्धन लोगों व 100 रजाईयां बांटी ।

3 श्री नरेन्द्र आहुजा हर वर्ष गरीबों में कम्बल व स्वैटर बांटते हैं। यही नहीं कुछ निर्धन बच्चों की शिक्षा की जिम्मेवारी ली हुई है।

4 उत्साही नवयुवक श्री नीरज कौड़ा ने अपनी कटिबधता का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करते हुये मोहाली में महर्षि दयानन्द बाल आश्रम को 1 फरबरी से कार्यरूप दे दिया व नों असहाय बच्चों ने वहां रहना शुरू कर दिया है।

5 आर्य समाज सैकटर–9 पंचकुला के उपप्रधान श्री सुरेंन्द्र मोहन सूद अपनी संस्था निष्काम सेवा संस्थान द्वारा कई गरीब वच्चों की शिक्षा व जरूरत मंद परिवारों की लड़कियों के विवाह करवातें हैं।

7 चण्डीगढ़ के श्री वी के महन जो कि आर्य समाज 32 सैक्टर के सदस्य हैं, नों ऐसी संस्थांए चलाते हैं जिस में गरीब बच्चों को शिक्षा व संस्कार दिये जाते हैं।

यही हैं संस्थाओं के लिये उतम यज्ञ

जब हम लोगों तक पहुंचेगे तभी लोग आपकी संस्था को जानेगें और तभी आपकी संस्था जिसका र्स्वणिम इतिहास है जीवित रहेगी।

——————————————————

*****

.... अभी, या फिर कभी नही का शेष भाग

मिलेगा जो कि हमारे व्यवसाय को बढ़ाने में बहुत मदतगार होगा।''

जो रमन ने कहा मैं उसे सुनकर स्तब्ध था और एकदम महाभारत की यह घटना मेरे मन को चीर कर निकल गई। जैसे हम सभी जानते हैं कर्ण अपनी उदारता के कारण दानवीर कर्ण के नाम से जाने जाते है। कभी ऐसा नहीं हुआ था कि उन्होने किसी को खाली हाथ जाने दिया हो। एक बार श्री कृष्ण जब कर्ण को मिलने उसके पास आये तो कर्ण मालिश करवा रहे थे। कर्ण ने बांए हाथ में एक बहुत सुन्दर सोने का कलश पहन रखा था। श्री कृष्ण ने उनकी परीक्षा लेने की सोची। श्री कृष्ण ने कर्ण से कहा कि वह सोने का कलश उन्हे दान में दे दे। कर्ण ने झट से वह कलश श्री कृष्ण को दे दिया।

श्री कृष्ण मुस्करा कर बोले––––''कर्ण तुमने सोने का कलश का दान देने में इतनी जलदी क्यों दिखाई, कम से कम हाथ धो कर दांए हाथ से दिया होता, जो कि दान देने कि विधी है।''

कर्ण ने उतर दिया––––––––––'' श्री कृष्ण, मैं दान देने में किसी प्रकार की देर नहीं करना चाहता क्योकिं आदमी का मन चंचल और अस्थिर **(fickleminded)** है व हर क्षण बदलता है। जब अच्छा काम करने का विचार आये, उसी क्षण कर डालो, अगर कल पर छोड़ोगे तो वह कल कभी नहीं आएगा। **We might not have tomorrow to make up for our procrastination.**

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म्।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
ई-मेल : dayanandashram@yahoo.com, वेब-साईट : www.dayanandbalashram.org

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम की मोहाली में स्थापना की जा रही है जिसमें अनाथ व निराश्रित (Orphan, Abandoned and Surrendered) बच्चों को सुरक्षा शिक्षा व संस्कार दिए जाएंगे। इस बाल आश्रम में इन बच्चों के रहने खाने और शिक्षा का निशुल्क प्रबन्ध किया जाएगा।

आपकी जानकारी में अगर कोई अनाथ व निराश्रित बच्चा है तो हमें सम्पर्क करें।

शिक्षा, भोजन, परवरिश व स्वास्थ्य
हर बच्चे का अधिकार

आप हमारी सहायता इस तरह भी कर सकते हैं :-

1. (क) बच्चों को खाना खिला कर।
   (ख) खाना अपने घर बनाकर अपने घर वितरण करना।
   (ग) खाना अपने घर बनाकर बाल आश्रम में वितरण करना।
   (घ) खाना बनाने के लिए राशन देना।
   (ङ) खाने के सहयोग के लिए पैसे देना।

2. आपके घर में कोई भी चीज़ जो जरुरत की नहीं है वो आप हमें दान दे सकते है जैसे बड़ो व बच्चों के कपड़े, रसोई का सामान बिस्तर व पंखे आदि। **आपके फोन करने पर संस्था अपनी गाड़ी आपके घर सामान लाने के लिए भेज देगी।**

3. आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा,	**नरेन्द्र गुप्ता**	**लेखराम (+91 7589219746)**
संरक्षक	प्रधान	मेनेजर

LIGHTER MOMENTS

अच्छे लोग अपने काम में लगे रहते हैं

एक दिन सागर ने नदी से पूछा,
कब तक मिलाती रहोगी खुद को खारे पानी से,
नदी ने हंस कर कहा,
जब तक तुझ में मिठास न आ जाये तब तक।।

*****

किसी दोस्त ने कहा–––A thing of beauty is joy for ever
मैने कहा बात तभी तक ठीक है जब तक उस से शादी न करो

*****

एक दोस्त मिला अभी तक कुंवारा था। कारण पूछा तो यों बोला––
बहुत पहले एक कहावत पड़ी थी–––Look before you leap. आज तक उस कहावत पर अमल कर रहां हूं

*****

Wit and humour तनावपूर्ण वातावरण को भी अ्च्छा बना देते हैं

विन्सटन चर्चिल इंगलैंड के बहुत मशहूर प्रधानमन्त्री हुये हैं। एक बार वहां की पार्लियामैंट का सत्र चल रहा था तो विपक्ष की नेता नैंसी उन से बहुत गुस्से में बोली–––'' श्री मान, अगर आप मेरे पति होते तो मैं आपको जहर दे देती''

विन्सटन चर्चिल मुसकराये और बोले–––'' अगर मैं आपका पति होता तो खुशी से जहर खा लेता।''

हरियाणा के खपों की सही सोच

शादी विवाहों में बहुत चमक दमक व खर्चा बेटी न चाहने का कारण

हरियाणा में खपों क यह कहना बिल्कुल सही है कि शादी विवाहों में बहुत चमक दमक व खर्चा एक मुख्य कारण है कि लोग बेटी के स्थान पर बेटा चाहते हैं। पर इस में मेरा मानना है कि इसमें लड़की वाले अधिक जिम्मेवार हैं जो कि दिखावे के मामले में एक दूसरे से बड़ चड़ कर करना फखर की बात समझते हैं। हर बार लड़के वालों का दबाव नहीं होता। इस के लिये लडकियां लड़के दोनो जिम्मेवार हैं जो कि हर चीज star hotels में ही चाहते हैं। मां बाप की स्थीति यह है कि एक या दो बच्चे होते हैं, ऐसे में वे बच्चों की हर ख्वाईश, ठीक हो या गलत, पूरा करना ही अपना धर्म समझते हैं क्योंकि आजकल जीवन ही बच्चों के लिये रह गया है। बाकी रिश्तेदारी, समाज या देश सब सोच से बाहर हैं।

*****

Trust the one who can see three things in you

1) **Sorrow behind your smile**
2) **Love behind your anger**
3) **Reason behind your silence**

Never be too proud and possessive of the position you hold because after the game of chess the Kings and pawns are tossed in to the same box.

वधु चाहिए

सौरभ आर्य (तलाक शुदा) 14/01/1982 मैढ़ राजपूत, M.Com,मांगलिक, 5'–4'' रंग गौरा, सुन्दर, ज्यूलरी शो रूम व एग्रीकलचर लैण्ड, जाति बन्धन नहीं, हरियाणवी को प्राथमिकता।व
साहिल आर्य, अविवाहित, 03/05/1990 मैढ़ राजपूत, B.Tech, मांगलिक, 5'–8'' रंग साफ, सुन्दर, ज्यूलरी शो रूम व एग्रीकलचर लैण्ड, जाति बन्धन नहीं, हरियाणा की सुशिक्षित कन्या चाहिए, सरकारी नौकरी को प्राथमिकता।

सम्पर्क करें : सत्यकाम आर्य, सत्यम ज्यलर्ज, रादौर, जिला यमुनानगर पिन 135133
मोबाईल : 9896084336

जिन महानुभावों का सहयोग बाल आश्रम के लिए इस महीने प्राप्त हुआ है

आचल अरोड़ा

परनव पाटिल

अविनाश चन्द गुप्ता पंचकूला

आर्य समाज, पंचकुला

आर.डी. ऋषि, पंचकुला

आर्य समाज में intellectual stream को फिर से जागृत करने के लिये मासिक गोष्ठी का सफल आयोजन

सभी सज्जनो को यह सूचित करते हुये हर्ष है आर्य समाज में intellectual विचारधारा को फिर से जागृत करने के लिये आर्य समाज सैक्टर 32 में 24 मार्च को 11 से 01 वजे तक दूसरी मासिक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था स्वामी दयानन्द का भारत के जागरण में योगदान। विषय साधारण होता हुआ महत्वपुर्ण इसलिये है क्योंकि जिस व्यक्ति का भारत के जागरण में सब से अधिक योगदान है उसे देश की जनता ने, नेताओं ने, मिडीया ने बिल्कुल भुला दिया है। गोष्ठी में शामिल 16 के करीब शामिल व्यक्तियों ने अपने विचार दिये।

इस गोष्ठी ने इस बात को उजागर किया कि हम में ज्ञानी लोगों की कमी नहीं। यह अलग बात है कि उनका लाभ उठाने की बजाए हम हजारों रूपया खर्चकर दूर दूर से वक्ताओं को बुलाते हैं। यह गाोष्ठी इस बात को भी सिद्ध कर रही है कि आर्य समाज का ज्ञान होने के लिये संस्कृत व हिन्दी का शास्त्री या पण्डित या गुरूकुल का आचार्य होना जरूरी नहीं जैसा की आर्य समाजों का महौल बना दिया गया है। इस गाोष्ठी के मुख्य आकर्षण रहे सर्वश्री कृष्ण चन्द्र गर्ग, नरेश आर्य व हरि किशोर। श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग Physics के professor हैं व सात वर्ष अमेरिका में पढ़ाते रहें हैं। उन्होने महर्षि दयानन्द व आर्य समाज पर कई पुस्तके लिखी हैं। जितना गहन अध्यन महर्षि दयानन्द के बारे में मैने उनका देखा है, मुझे और कहीं देखने को नहीं मिला। श्री नरेश आर्य इंजिनयर हैं व जनरल मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं इसी तरह श्री हरि किशोर ऐयर फोर्स में रहें हैं, उनका विष्लेशन काबिले तारीफ था। जब हम ऐसे व्यक्तियों को आर्य समाज में बुलायेंगें तभी नई पौध आयेगी। खास बात यह है कि ऐसे व्यक्ति कोई पैसा नहीं चाहते बल्कि देना ही चाहते हैं।

अगली गोष्ठी 28 अप्रैल को 11 से 01 बजे तक आर्य समाज सैक्टर 22 मे होगी विषय होगा————**1947 के बाद आर्य समाज क्यों सिकुड़ता जा रहा है।** इस में कोई भी खास वक्ता आमन्त्रित नहीं होगा। हर एक participant 10 मिन्ट के लिये बोल सकता है। आप अपने साथ अपने मित्रों को सहर्ष लायें चाहे वे आर्य समाजी हैं या नही। आप के प्रश्नों का उत्तर वहीं पर आप द्वारा ही देने की या अगली चर्चा में देने की कोशिश की जायेगी। आप किसी भी भाषा में बोल सकते हैं। गोष्ठी हवन,भजन, लंगर व शांतिपाठ अभिन्दन आदि ritual के बिना होगी। आप सादर आमन्त्रित हैं।

सम्पादक 9217970381

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 60 वर्ष

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Mumbai-23095120,, 9892904519, 25412033, 25334055, Banglore-22875216, Hydrabad-24651472, 24751760, Kolkata-9339344231, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Indore-982633800, Gurgaon-2332988, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790, Yamunanagar-232063, Kanpur-2398775, Nainital-235489, Mukerian-245113, Ujjain-2562140, Porbander-9825275198, Ajmer-2431084, Kota 7597306851, Jhansi-244163

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी,
कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

PARKASH AUSHDHALYA

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

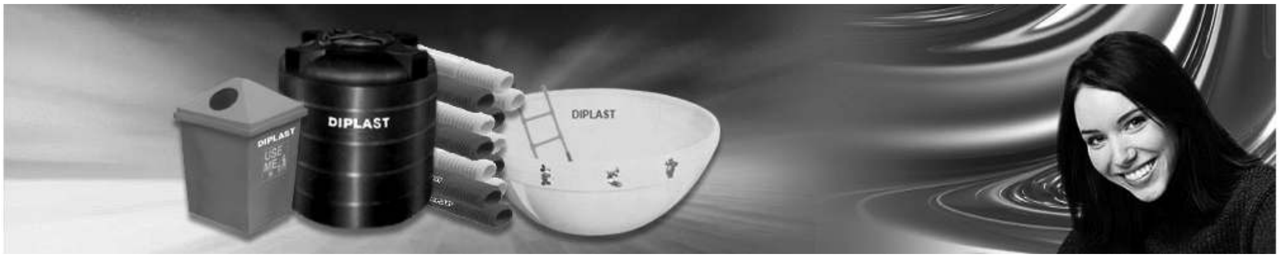

मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश,
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये
शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

**Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870**